18

''पिता अब्राहम''

(4:9-17क)

पुराने और नये दोनों नियमों में अब्राहम एक मुख्य व्यक्ति है। नये नियम में उसका नाम पौलुस या पतरस के नाम से अधिक बार आता है![1] दोनों नियमों में उसे परमेश्वर का मित्र कहा गया है (यशायाह 41:8; याकूब 2:23)। ह्यूगो मेकोर्ड ने कहा है, ''परमेश्वर उस में बहुत आनन्दित हुआ क्योंकि वह परमेश्वर में बहुत आनन्दित हुआ।''[2]

रोमियों 4 में विश्वास से धर्मी ठहराए जाने का पौलुस का मुख्य उदाहरण अब्राहम है। यह पाठ 4:9-17क पर केन्द्रित होगा। इस वचन का विषय अब्राहम का *पुरखा होना* है। आयत 12 में उसे पिता अब्राहम कहा गया है। आयत 16 में पौलुस ने ''अब्राहम, सब का पिता'' की बात की; आयत 11 में उसे ''उन सब का पिता जो विश्वास करते हैं'' कहा।

वचन पाठ का अध्ययन आरम्भ करने से पहले आइए अब्राहम के जीवन की मुख्य घटनाओं तथा उनके क्रम को दोहरा लेते हैं। जब अब्राहम साठ वर्ष के करीब था, तो परमेश्वर ने उसे कसदियों के ऊर में से बुलाया (उत्पत्ति 11:31; 15:7)। वह और उसका पिता तेरह परिवार के अन्य लोगों के साथ हारान को चले गए (पृष्ठ 166 पर ''अब्राहम की यात्राओं का देश'' मानचित्र देखें)। तेरह की मृत्यु के बाद (11:32), अब्राहम जब पचहत्तर वर्ष का था (12:4), तो परमेश्वर ने उसे दर्शन देकर कहा:

> अपने देश, और कुटम्बियों,
> और अपने पिता के घर को छोड़कर
> उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा [कनान];
> और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा,
> और तुझे आशीष दूंगा,
> और तेरा नाम बड़ा करूंगा,
> और तू आशीष का मूल होगा;
> और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा,
> और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा;
> और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे (उत्पत्ति 12:1ख-3)।

परमेश्वर ने अब्राहम को सम्पत्ति की प्रतिज्ञा, लोगों की प्रतिज्ञा दी; परन्तु हमारे लिए सबसे अधिक दिलचस्पी वाली बात उद्देश्य की प्रतिज्ञा है: ''और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे'' (देखें गलातियों 3:8)।

अब्राहम कनान की ओर चल दिया; परन्तु एक दशक या इससे अधिक समय बीत गया, वह और सारा अभी तक नि:संतान थे। परमेश्वर ने अब्राहम को आश्वस्त किया कि उसकी संतान धूल

के कणों के समान (उत्पत्ति 13:16) और आकाश के तारों के समान (उत्पत्ति 15:5) अनगिनत होगी। कहा गया है कि यहां अब्राहम ने ''यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना'' (उत्पति 15:6)।

और पन्द्रह साल बीत गए। जब अब्राहम निन्यानवे वर्ष का हुआ तो परमेश्वर ने फिर उसे दर्शन दिया और कहा:

> ... देख, मेरी वाचा तेरे साथ बन्धी रहेगी,
> इसलिए तू जातियों के समूह का मूलपिता हो जाएगा।
> सो अब से तेरा नाम अब्राम [''उन्नत पिता''] न रहेगा,
> परन्तु तेरा नाम अब्राहम [''बहुतों का पिता''] होगा;
> क्योंकि मैं ने तुझे जातियों के समूह का मूलपिता ठहरा दिया है।
> और मैं तुझे अत्यन्त ही फलवंत करूंगा,
> और तुझ को जाति-जाति का मूल बना दूंगा, ... (उत्पत्ति 17:4-6)।

उस समय परमेश्वर ने खतने की रीति आरम्भ की (उत्पत्ति 17:9-14, 23-27)। परमेश्वर ने कहा कि ''जो वाचा मेरे और तुम्हारे बीच में, उसका यही चिह्न होगा'' (आयत 11)।

अगले पाठ में हम अब्राहम के जीवन के बारे में और कहेंगे; इस प्रस्तुति के लिए हम एक अंतिम घटना पर ध्यान देना चाहते हैं। अध्याय 22 में अब्राहम के अपने विश्वास की सबसे कठिन परीक्षा देने के बाद,[3] परमेश्वर ने उसके साथ नये सिरे से वाचा बांधी और कहा, ''पृथ्वी की सारी जातियां अपने को *तेरे वंश के* कारण धन्य मानेंगी'' (उत्पत्ति 22:18क)।

वचन पाठ की समीक्षा करते हुए इस कालक्रम को ध्यान में रखें।[4] व्यवस्था/कामों के प्रबन्धों के साथ विश्वास के प्रबन्ध में अन्तर करते हुए पौलुस ने ''परमेश्वर का अद्‌भुत 'गिनती करने का प्रबन्ध' पर'' बात करना जारी रखा। परन्तु हमारे अध्ययन का केन्द्र ''पिता अब्राहम'' पर केन्द्रित होगा। हम यह जानना चाहते हैं कि वह ''हम सब का पिता'' *क्यों* है।

वह ''पिता अब्राहम'' है क्योंकि वह खतना किए जाने से पहले धर्मी ठहराया गया था (4:9-12)

हर यहूदी के हरमन प्रिय दो तथ्य थे। एक तो यह कि उनका खतना हुआ है और दूसरा उनके पास मूसा की व्यवस्था थी। इन दोनों ने उन्हें *यहूदी* और परमेश्वर की नज़रों में *विशेष* बना दिया। अपने धर्मी ठहराए जाने के लिए वे खतने और व्यवस्था पर निर्भर थे।[5] रोमियों 22 में पौलुस ने पहले व्यवस्था की चर्चा की (आयतें 17-24) और फिर खतने की (आयतें 25-29)। 4:9-12 में उसने विपरीतक्रम में फिर से इन दोनों की चर्चा की।

''खतनारहित दशा में''

हमारा पिछला पाठ इन शब्दों के साथ समाप्त हुआ था:

> जिसे परमेश्वर बिना कर्मों के धर्मी ठहराता है,
> उसे दाऊद भी धन्य कहता है:

''कि धन्य वे हैं, जिन के अधर्म क्षमा हुए,
और जिन के पाप ढांपे गए।
धन्य है वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराए'' (4:6-8)।

उस पद्य में ''धन्य होना'' पापों की क्षमा पाने को कहा गया है। पौलुस ने आगे पूछा, ''तो यह धन्य वचन, क्या खतना वालों के लिए ही है या खतना रहितों के लिए[6] भी'' (आयत 9ख)। अन्य शब्दों में क्या यहूदियों के ही पाप क्षमा हो सकते हैं या अन्यजातियों के भी पाप क्षमा हो सकते हैं? बहुत से यहूदियों ने उत्तर दिया होगा, ''ऐसी आशिषें तो केवल यहूदियों के लिए हैं!'' परन्तु पौलुस ने यह साबित करना था कि परमेश्वर के अनुग्रह के प्रबन्ध *सब के* लिए हैं।

पौलुस ने पहले तो अपने पाठकों को यह प्रमाण का वचन याद दिलाया (उत्पत्ति 15:6): ''हम यह कहते हैं, 'अब्राहम के लिए उसका विश्वास धार्मिकता गिना गया [*logizomai*]' '' (रोमियों 4:9ख)। फिर उसने पूछा, ''तो वह क्योंकर [किन परिस्थितियों में] गिना गया [*logizomai*] [अब्राहम के लिए धार्मिकता]? खतने की दशा में या बिना खतने की दशा में?'' (10क)। यह एक ऐसा प्रश्न था जिस पर अधिकतर यहूदियों ने कभी विचार नहीं किया होगा।

पौलुस ने अपने ही सवाल का जवाब दिया: ''खतने की दशा में नहीं परन्तु बिना खतने की दशा में'' (10ख)। विश्वास से अब्राहम के धर्मी ठहराए जाने की बात उत्पत्ति 15 में कही गई है जबकि खतने की रीति के आरम्भ का विवरण उत्पत्ति 17 में यानी कम से कम चौदह साल बाद।[7] यहूदी पुरुषों का मानना था कि एक अर्थ में खतना उन्हें ''यहूदी'' बनाता था; वे यहूदियों को ''खतना किए हुए'' और अन्यजातियों को ''खतना रहित'' कहते थे। इस प्रकार उनके अपने ही तर्क से अब्राहम ''यहूदी'' बनने से पहले विश्वास से धर्मी ठहराया गया था, यानी जब वह अभी ''अन्यजाति'' था!

यह एक और सवाल खड़ा करता है कि फिर परमेश्वर ने अब्राहम और और उसके परिवार के दूसरे पुरुष सदस्यों को खतना करने की आज्ञा क्यों दी? यदि यह बचाता नहीं है तो इस रीति का उद्देश्य क्या था। पौलुस ने आगे कहा, ''और उसने [अब्राहम ने] खतने की चिह्न [*semeion*] पाया, कि उस विश्वास की धार्मिकता पर छाप [*sphragis*] हो जाए, जो उस ने बिना खतने की दशा में रखा था'' (रोमियों 4:11क)। इस रीति का आरम्भ करते हुए परमेश्वर ने अब्राहम को बताया, ''तुम ... खतना करा लेना: जो वाचा मेरे और तुम्हारे बीच में है, उसका यही *चिह्न*[8] होगा'' (उत्पत्ति 17:11)। खतना यहूदियों को उन्हें बचाने के लिए नहीं दिया गया था बल्कि ''चिह्न'' और ''छाप'' के लिए यानी ''उनकी पहचान के *चिह्न*'' और ''उनकी प्रमाणिकता की *छाप*'' के रूप में दिया गया था।

बहुत सी साम्प्रदायिक कलीसियाओं के टीकाओं में यहां जोड़ा गया है, ''बपतिस्मे के साथ ऐसा ही है। इसका हमारे उद्धार से कोई सम्बन्ध नहीं है,बल्कि यह हमारे धर्मी ठहराए जाने का केवल चिह्न और छाप है।'' इस तथ्य के बावजूद कि हमारे पास ऐसा कोई संकेत नहीं है कि पौलुस ने ऐसी प्रासंगिकता बनानी चाही वे यह मज़बूत दावा करते हैं। एक डिनोमिनेशन के टीकाकार को मानना पड़ा कि ''रोमियों 4 में बपतिस्मे के बारे में ऐसी कोई बात नहीं है। ...''[10] पौलुस ने पवित्र आत्मा के दान को (जो हमें बपतिस्मा लेने पर मिलता है; प्रेरितों 2:38) ''छाप''

कहा है (देखें इफिसियों 1:13, 14)। बपतिस्मे के उद्देश्य पर चर्चा हम रोमियों 6 अध्याय में पहुंचकर करेंगे।

''सब विश्वास करने वालों का पिता''

पौलुस ने यह निष्कर्ष निकाला कि अब्राहम खतना होने से पहले विश्वास से धर्मी ठहराया गया था, ''जिससे वह उन सबका पिता ठहरे, जो बिना खतने की दशा में विश्वास करते हैं, और कि वे भी धर्मी ठहरें'' (4:11ख)। पौलुस ने लिखा था कि अब्राहम यहूदियों का शारीरिक पिता (*propator*) था (आयत 1); अब उसने यह घोषणा की कि वह यीशु में विश्वास करने वाले अन्यजातियों का आत्मिक पिता (*pater*) है। यदि अन्यजाति विश्वास करते तो यह उनके लेखे में ''धार्मिकता'' (परमेश्वर के साथ सही खड़े होना) ''गिना जाना था [*logizomai*]'' (आयत 11ग) ठीक वैसे ही जैसे अब्राहम ठहरा था। AB का अनुवाद है कि यह ''उनके लेखे में गिना'' जाना था। ''परमेश्वर का अद्‌भुत 'गिनती करने का प्रबन्ध' '' सब के लिए है!

क्या इससे यहूदी लोग बाहर निकल गए? नहीं, अब्राहम अभी भी ''उन खतना किए हुओं [यहूदियों] का पिता [*pater*]'' था (आयत 12क)। परन्तु यहूदियों को यह अहसास होना आवश्यक था कि अब्राहम ''*न केवल* उनका पिता है जो खतना किए हुए हैं, परन्तु हमारे पिता अब्राहम के उस विश्वास की लीक पर *भी* चलते हैं'' (आयत 12ख)। यीशु ने अपने आलोचकों से कहा था ''यदि तुम [सचमुच] अब्राहम की संतान होते, तो अब्राहम के समान काम करते'' (यूहन्ना 8:39; [NIV])। विशेषकर उन में *वह विश्वास* होना आवश्यक है, जो अब्राहम ''ने बिन खतने की दशा में किया था'' (रोमियों 4:12ग)।

पौलुस का पहला प्रमाण कि अब्राहम ''सब विश्वास करने वालों का पिता'' (आयत 11) है, यह था कि वह एक अर्थ में ''यहूदी बनने'' से कई साल पहले विश्वास से धर्मी ठहराया गया था। इसलिए धर्मी ठहराया जाना ''विश्वास से है न कि शरीर से।''[11] कई यहूदियों के लिए यह कितना चौंका देने वाला होगा कि परमेश्वर *खतनारहित विश्वासी* को स्वीकार कर लेगा परन्तु खतना किए हुए *अविश्वासी* को ठुकरा देगा।

यदि आप परमेश्वर द्वारा स्वीकार होना चाहते हैं तो आपको भी ''हमारे पिता अब्राहम के उस विश्वास की लीक पर चलना'' आवश्यक है। विशेषकर अब्राहम की नये नियम की संतान के रूप में आपको यीशु में और उसकी इच्छा पूरी करने में अपना भरोसा रखना होगा।

वह ''पिता अब्राहम'' है क्योंकि वह व्यवस्था दिए जाने से पहले धर्मी ठहराया गया था (4:13-17क)

पौलुस ने अपना ध्यान दूसरी बात यानी मूसा की व्यवस्था की ओर मोड़ा जो यहूदियों को दूसरों से अलग करती थी। एफ़. एफ. ब्रूस के अनुसार, पौलुस कह रहा था कि ''यदि परमेश्वर द्वारा अब्राहम को धर्मी ठहराने से खतने का कोई सम्बन्ध नहीं है, ... तो व्यवस्था का इससे भी कम सम्बन्ध था।''[12]

''प्रतिज्ञा''

पौलुस ने पहले ''यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा, न अब्राहम को, न उसके वंश[13]

को व्यवस्था के द्वारा दी गई थी'' (4:13क) की बात की। 4:13-21 में अनुवादित शब्द ''प्रतिज्ञा'' (*epangelia*) मुख्य शब्द है। संज्ञा रूप चार बार मिलता है (आयतें 13, 14, 16, 20), जबकि क्रिया रूप एक ही बार मिलता है (आयत 21)। ये सब उस ''प्रतिज्ञा'' की बात करते हैं कि अब्राहम और उसकी संतान ''जगत के वारिस'' होंगे। इस भाग में आगे मैं इसे ''प्रतिज्ञा'' ही कहूंगा।

उत्पत्ति में अब्राहम से कोई विशेष प्रतिज्ञा नहीं है कि वह ''जगत का वारिस'' होगा,[14] सो अब्राहम से परमेश्वर द्वारा की गई कई प्रतिज्ञाओं को संक्षिप्त करने का पौलुस का यह ढंग हो सकता है। शायद इनमें से कोई एक प्रेरित के मन में सबसे ऊपर था: '' *पृथ्वी की सारी जातियां* अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी'' (उत्पत्ति 22:18क; देखें 12:3)। एक और जगह पौलुस ने ध्यान दिलाया कि यह मसीहा से जुड़ी प्रतिज्ञा है: ''निदान, प्रतिज्ञाएं अब्राहम को, और उसके वंश को दी गईं: वह यह नहीं कहता, कि वंशों को; जैसे बहुतों के विषय में कहा, पर जैसे एक के विषय में कि तेरे वंश को: और वह मसीह है'' (गलातियों 3:16)।

मसीह अर्थात अब्राहम के आत्मिक वंश के द्वारा ''जगत के वारिस'' बनते हैं (तुलना करें मत्ती 5:5)। कुरिन्थुस की कलीसिया के नाम लिखते हुए पौलुस ने कहा, ''क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है: ... क्या जगत, क्या जीवन, क्या मरन, क्या वर्तमान, क्या भविष्य, सब कुछ तुम्हारा है'' (1 कुरिन्थियों 3:21ख, 22)। सब कुछ ''हमारा'' इस अर्थ में है कि सब कुछ परमेश्वर का है और हम परमेश्वर की संतान हैं। परमेश्वर अपने बच्चों की देखभाल करता है और इस बात का ध्यान रखता है कि हमें किस चीज़ की आवश्यकता है।

> ''... अपने प्राण के लिए यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे और क्या पीएंगे; और न अपने शरीर के लिए कि क्या पहिनेंगे। ... इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो और यह सब चीज़ें भी तुम्हें मिल जाएंगी (मत्ती 6:25-33)।

''व्यवस्था के द्वारा नहीं''

> क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा, न अब्राहम को, न उसके वंश को व्यवस्था के द्वारा दी गई थी, परन्तु विश्वास की धार्मिकता के द्वारा मिली। क्योंकि यदि व्यवस्था वाले वारिस हैं, तो विश्वास व्यर्थ और प्रतिज्ञा निष्फल ठहरी। व्यवस्था तो क्रोध उपजाती है और जहां व्यवस्था नहीं वहां उसका टालना भी नहीं।
>
> इसी कारण वह विश्वास के द्वारा मिलती है, कि अनुग्रह की रीति पर हो (4:13-16क)।

परमेश्वर ने अब्राहम और उसकी संतान को प्रतिज्ञा दी, परन्तु यह प्रतिज्ञा मूसा की व्यवस्था दिए जाने के कारण नहीं दी गई थी। पौलुस ने कहा कि यह ''व्यवस्था के द्वारा नहीं थी'' (4:13ख) यानी यह व्यवस्था के द्वारा नहीं दी जा सकती थी क्योंकि व्यवस्था ''चार सौ तीस बरस के बाद'' मूसा द्वारा दी गई थी (गलातियों 3:17)। बल्कि पौलुस ने कहा कि प्रतिज्ञा ''विश्वास की धार्मिकता के द्वारा'' दी गई (रोमियों 4:13ग)।

यह तथ्य कि मूसा की व्यवस्था सदियों बाद दी गई थी काफ़ी सबूत था कि व्यवस्था का प्रतिज्ञा से कोई सम्बन्ध नहीं था। परन्तु पौलुस ने इसे यहीं नहीं छोड़ा। उसने व्यवस्था/कामों के प्रबन्ध और अनुग्रह/विश्वास के प्रबन्ध में अन्तर जारी रखने के अवसर का लाभ उठाया। मूल धर्मशास्त्र में 13 और 14 आयतों में ''व्यवस्था'' के लिए अंग्रेजी शब्द ''law'' शब्द से पहले कोई निश्चित उप-पद (the) नहीं है। संदर्भ हमें बताता है कि पौलुस के मन में निश्चिय ही मूसा की व्यवस्था थी; परन्तु निश्चित उप-पद का न होना यह संकेत देता है कि इसकी सामान्य प्रासंगिकता बनाई जा सकती है। यदि प्रतिज्ञा का पूरा होना व्यवस्था के पूरा होने पर निर्भर होता तो यह प्रतिज्ञा सदा-सदा के लिए अधूरी रह जाती क्योंकि कोई भी, चाहे वह अब्राहम ही क्यों न हो व्यवस्था (किसी भी व्यवस्था) को पूरी तरह से पूरा नहीं कर पाया। पौलुस का निष्कर्ष था कि प्रतिज्ञा का पूरा होना अनुग्रह/विश्वास के प्रबन्ध पर निर्भर था यानी यह ''विश्वास की धार्मिकता के द्वारा'' था (आयत 13ग)।

''क्योंकि यदि व्यवस्था वाले वारिस हैं, तो विश्वास व्यर्थ और प्रतिज्ञा निष्फल ठहरी'' (आयत 14)। ''व्यवस्था वाले'' वाक्यांश का इस्तेमाल करते हुए पौलुस के मन में मुख्यतया यहूदी ही होंगे (देखें आयत 16)। परन्तु आयत 14 में मूल धर्मशास्त्र में सामान्य शब्द ''व्यवस्था'' है, इसलिए इसमें किसी भी व्यक्ति को शामिल किया गया जो व्यवस्था/कामों के प्रबन्ध पर निर्भर था। यदि प्रतिज्ञा व्यवस्था/कामों के प्रबन्ध पर निर्भर होती तो दो परिणाम निकलने थे।

पहला, विश्वास ''निष्फल हो जाता।'' अनुवादित शब्द ''निष्फल'' (*kenos*) का मुख्य अर्थ ''खाली'' है।[16] AB में ''सब अर्थों से खाली'' है। व्यवस्था और कामों का प्रबन्ध और अनुग्रह/विश्वास के प्रबन्ध में आपस में मेल नहीं है। यदि व्यवस्था/कामों के प्रबन्ध को स्थापित किया जाता है तो अनुग्रह/विश्वास का प्रबन्ध निकल जाता है (जिसका अर्थ यह होगा कि हम विनाश की ओर जा रहे हैं क्योंकि व्यवस्था को पूरी तरह से कोई पूरा नहीं कर सकता)।

दूसरा परिणाम यह होना था कि प्रतिज्ञा ''निष्फल'' हो जानी थी। ''निष्फल'' का अनुवाद katargeo से किया गया है, जो ''निष्क्रियता में नीचे लाना'' के अर्थ वाला एक मिश्रित शब्द है (*kata* [''नीचे''] के साथ *argos* [''निष्क्रियता'']।[17] AB में ''मिटा दिया और कोई उत्तर नहीं है'' है। अब्राहम को प्रतिज्ञा इसलिए नहीं दी गई थी कि उसने परमेश्वर के नियमों का पूरी रीति से पालन किया था, बल्कि इसलिए दी गई थी क्योंकि उसे *विश्वास* था (गलातियों 3:18 से तुलना करें)। पौलुस यह कह रहा था कि यदि प्रतिज्ञा को पाना व्यवस्था का पालन करने पर निर्भर होता, तो हम (जैसा हम कहते हैं) ''इसे भूल जाएं'' क्योंकि इसे कभी पूरा नहीं किया जा सकता।

ऐसा क्यों है? क्योंकि व्यवस्था का पालन करने से परमेश्वर की आशिषें लाने के बजाय पौलुस ने कहा कि ''व्यवस्था तो क्रोध [*orge*] उपजाती है'' (रोमियों 4:15क)। आयत 15 में ''व्यवस्था'' से पहले एक निश्चित उपपद है, इसलिए पौलुस सीधे यहूदियों से बात कर रहा था जो मूसा की व्यवस्था को व्यवस्था/कामों के प्रबन्धों के सम्बन्ध में ''नियम का अपवाद'' मानते होंगे।

यह कहकर कि ''व्यवस्था क्रोध उपजाती है'' पौलुस यह नहीं कह रहा था कि मूसा की व्यवस्था का कोई महत्व नहीं है (देखें 7:12); क्योंकि आखिर तो यह परमेश्वर द्वारा दी गई थी, बल्कि वह कह रहा था कि क्योंकि व्यवस्था को कोई पूरी रीति से पूरा नहीं कर सकता, इसलिए अन्त में व्यवस्था क्रोध ही उपजा सकती थी। इस पर और चर्चा हम अध्याय 7 के सम्बन्ध में

करेंगे। अभी के लिए आइए यह देखते हैं कि इन ढंगों से ''व्यवस्था क्रोध उपजाती है'':

- यह पाप के प्रति सचेत करती है (कि पाप क्या है) (3:20)।
- एक अर्थ में यह पाप को बढ़ावा देती है (बच्चों को कोई काम *न* करने के लिए कहे जाने पर कुछ बच्चों की प्रतिक्रिया पर विचार करें) (देखें 5:20क; 7:5)।
- यह पाप को दोषी ठहराती है (देखें व्यवस्थाविवरण 28:58, 59)।

व्यवस्था के साथ दिक्कत यह है कि यह ''बीमारी तो बता सकती है पर उसका इलाज नहीं कर सकती।''[18]

यह कहने के बाद कि ''व्यवस्था क्रोध उपजाती है'' पौलुस ने वह बात जोड़ी जिससे उसके पाठक उलझन में पड़ गए हैं: ''और जहां व्यवस्था नहीं वहां उसका टालना भी नहीं'' (4:15ख)। ''टालना'' का अनुवाद *parabasis* से किया गया है, जिसका आम तौर पर अर्थ ''अपराध'' होता है (देखें KJV)।[19] इस शब्द का अर्थ व्यवस्था का *सीधा उल्लंघन* है।

शायद पौलुस के विचार को विस्तार देने से हम बेहतर ढंग से समझ सकते हैं कि उसने इसे क्यों जोड़ा। ''व्यवस्था'' शब्द से पहले न तो हिन्दी और न यूनानी में कोई निश्चित उप-पद है सो पौलुस ने यहां सामान्य अर्थ में व्यवस्था के नियम की बात की।

- ''जहां व्यवस्था नहीं वहां ... उल्लंघन भी नहीं।'' इससे हम निष्कर्ष निकालते हैं कि जहां *व्यवस्था* है, वहां *उल्लंघन* है।
- हर व्यक्ति के पास व्यवस्था है, चाहे वह लिखित में या अलिखित, परन्तु किसी ने कभी उस व्यवस्था को जो उसके पास है पूरी रीति से नहीं माना। अंतत: सब व्यवस्था का उल्लंघन करने वाले हैं।
- ऐसा है तो व्यवस्था सब पर ''क्रोध'' लाती है।

आयत 16 में पौलुस इस निष्कर्ष पर पहुंचा: ''इसी कारण [क्योंकि व्यवस्था क्रोध लाती है, आशीष नहीं] यह [प्रतिज्ञा का पाना] विश्वास पर आधारित है। ...'' यदि व्यवस्था/कामों का प्रबन्ध केवल क्रोध ही उपजा सकता है तो यह प्रतिज्ञा केवल अनुग्रह/विश्वास के प्रबन्ध के द्वारा ही पूरी हो सकती थी। गुडस्पीड के अनुसार ''यही कारण है कि यह विश्वास को स्वीकार करती है।''

पौलुस ने कहा, ''इसी कारण वह विश्वास के द्वारा मिलती है, कि अनुग्रह [*charis*] की रीति पर हो'' (आयत 16क)। फिलिप्स के संस्करण में इसे ''मनुष्य की ओर से विश्वास और परमेश्वर के [योगदान] की ओर से उदारता की बात'' के रूप में कहा है। प्रतिज्ञा अब्राहम को दिया गया *एक दान* था जो उसके द्वारा किए गए काम पर आधारित नहीं, बल्कि उसके विश्वास पर आधारित था। यहूदियों को यह समझने की आवश्यकता थी कि उनका ''उद्धार अनुग्रह से हुआ था न कि जाति से''[20] (देखें लूका 3:7-9)। आपको और मुझे *भी* समझने की आवश्यकता है कि हमारा उद्धार ''विश्वास पर आधारित है कि अनुग्रह की रीति पर हो''!

''बहुत सी जातियों का पिता''

> कि अनुग्रह की रीति पर हो, कि प्रतिज्ञा सब वंश के लिए दृढ़ हो, न कि केवल उसके लिए जो व्यवस्था वाला है, बरन उनके लिए भी जो इब्राहीम के समान विश्वास वाले हैं: वही तो हम सब का पिता है। जैसा लिखा है, कि मैं ने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है, उस परमेश्वर के साम्हने जिस पर उस ने विश्वास किया (आयतें 16ख, 17क)।

प्रतिज्ञा का पूरा होना विश्वास और अनुग्रह के द्वारा हुआ ''कि वह उसके सब वंशजों के लिए दृढ़ हो'' (रोमियों 4:16ख)। व्यवस्था/कामों के प्रबन्ध ने प्रतिज्ञा को *निष्फल* कर देना था (आयत 14), परन्तु अनुग्रह/विश्वास का प्रबन्ध इसकी *गारंटी* देता है। ''वंशजों'' का अनुवाद *sperma* से किया गया है, जो ''बीज'' के लिए शब्द है (देखें KJV)। आम तौर पर इसका अर्थ एक या अधिक शारीरिक संतानें होता है, परन्तु यहां यह *आत्मिक* वंशजों के लिए है।

गारंटी ''न कि केवल उसके लिए जो व्यवस्था वाला [यहूदी] है, बरन उनके लिए भी जो अब्राहम के समान विश्वास वाले हैं: वही तो हम सब का पिता है'' (आयत 16ग)।[21] यह गारंटी यीशु में विश्वास करने वाले यहूदियों के लिए ही नहीं बल्कि अन्यजातियों के लिए भी है जो ''पिता अब्राहम के उस विश्वास की लीक पर चलते हैं'' (आयत 12)। इस प्रकार अब्राहम हम सब का [आत्मिक पिता] है यानी उन सब का जो विश्वास करते हैं, चाहे वह यहूदी हों या अन्यजाति।

पौलुस ने कहा कि अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञाओं में से एक में यह पहले से बताया गया था: ''जैसा लिखा है, कि मैं ने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है'' (आयत 17क)। यह उस समय की बात है जब परमेश्वर ने अब्राहम को दर्शन दिया था जब वह निन्यानवे वर्ष का था और उसके साथ अपनी वाचा दोहराई थी। उस समय परमेश्वर ने अब्राहम से कहा था, ''मैं ने तुझे जातियों के समूह का मूलपिता ठहरा दिया है'' (उत्पत्ति 17:5)।

अब्राहम ''बहुत सी जातियों का [*शारीरिक*] पिता'' था। वह अपने पुत्र इसहाक और अपने पोते याकूब के द्वारा इस्राएल जाति का ''पिता'' था। एक और पुत्र इशमाइल को ''अरबियों के पूर्व पुरुष [पूर्वज] के रूप में माना जाता है।''[22] एक और पत्नी जिसका नाम कतूरा था, से और पुत्र हुए (उत्पत्ति 25:1-4); इनमें से एक मिदियानियों का पूर्वज था। अब्राहम के पोते एसाव की संतान एदोमी बन गए (देखें उत्पत्ति 25:30)।

परन्तु आत्मा की अगुआई से पौलुस ने कहा कि उत्पत्ति 17:5 में आत्मिक भविष्यवाणी थी। अब्राहम को ''बहुत सी जातियों का [आत्मिक] पिता'' भी होना था। पौलुस शब्दों का खेल खेल रहा हो सकता है। ''जातियों'' के लिए यूनानी शब्द *ethnos* (जिससे अंग्रेज़ी शब्द ''ethnic'' निकला है) का एक रूप है और ''अन्यजाति'' के लिए यूनानी शब्द *ethnos* है। रोमियों 4:17 के उद्धरण का मूल अर्थ यह हो सकता है ''मैंने तुझे बहुत सी *अन्यजातियों* का पिता बनाया है!'' मेकोर्ड इस बात से आनन्दित था कि ''[इस प्रकार] परमेश्वर मुझे और आपको भीतर आने दे रहा था, अब्राहम से चाहे हमारा खूनी रिश्ता नहीं है!''[23]

सारांश

बच्चे कई बार ''पिता अब्राहम'' के बारे में गाते हैं:

फादर अब्राहाम हैड मैनी संस;
मैनी संस हैड फ़ादर अब्राहाम
आई एम वन ऑफ़ दैम
एण्ड सो आर यू,
सो लैट्स ऑल प्रेज़ द लॉर्ड![24]

नन्हें-मुन्नों को यह गीत अच्छा लगता है चाहे उन्हें यह पता नहीं है कि इसमें कितनी अद्‌भुत सच्चाइयां हैं!

हमारे पाठ के वचन में, पौलुस ने ज़ोर दिया कि अब्राहम की संतान बनने से हमारे खतने का कोई सम्बन्ध नहीं है क्योंकि अब्राहम खतने की रस्म आरम्भ होने से कम से कम चौदह साल पहले विश्वास से धर्मी ठहराया गया था। व्यवस्था के दिए जाने से सदियों पहले विश्वास से अब्राहम के धर्मी ठहराए जाने का मूसा की व्यवस्था से कोई सम्बन्ध नहीं है। नहीं, अब्राहम हमारा आत्मिक पिता तभी होता है जब हमारा *विश्वास* उसके जैसा हो जाता है। पौलुस ने इसे कहीं और इस प्रकार लिखा है:

> क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; ... यदि तुम मसीह के हो, तो इब्राहीम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो (गलातियों 3:26-29)।

अगले पाठ में हम उस विश्वास की जो अब्राहम को था और गहराई से समीक्षा करेंगे। इस अध्ययन को समाप्त करते हुए, मैं पूछता हूं, ''*क्या* अब्राहम आपका पिता है?'' यानी क्या आपका अब्राहम जैसा विश्वास है? क्या आप सचमुच परमेश्वर में भरोसा रखते हैं? क्या आपको उस पर भरोसा है कि वह अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार करेगा? क्या आप अपने विश्वास को वैसे ही व्यवहार में लाने को तैयार हैं जैसे अब्राहम में डाला था? यदि आपने यीशु की आज्ञाओं को मानने के द्वारा अपने विश्वास को व्यक्त नहीं किया है (देखें लूका 6:46; मत्ती 7:21; मरकुस 16:16), तो मेरा आपसे आग्रह है कि *अभी* अपना विश्वास दिखाएं।

टिप्पणियां

[1]जिम टाउनसेंड, *रोमन्स: लेट जस्टिस रोल* (एलिजन, इलिनोइस: डेविड सी. कुक पब्लिशिंग कं., 1988), 31. [2]ह्यूगो मेकोर्ड, ओक्लाहोमा क्रिश्चियन कॉलेज (अब यूनिवर्सिटी) तिथि नहीं, कैसेट में छात्रों के लिए प्रस्तुत की गई रोमियों 4:13-25 पर चर्चा। [3]यह एक वेदी पर इसहाक को बलिदान करने के लिए अब्राहम को दी गई परमेश्वर

की आज्ञा की बात है। [4]रोमियों 4 और गलातियों 3 में कई समानताएं पाई जाती हैं। रोमियों 4 का अध्ययन जारी रखने से पहले गलातियों 3 पढ़ लें। [5]खतने के प्रति उनके व्यवहार के बारे में, प्रेरितों 15:1 में कुछ यहूदी मसीहियों द्वारा की गई टिप्पणियां देखें। [6]मूल धर्मशास्त्र में अक्षरश: इसका अर्थ ''खतना'' और ''बिना खतने के'' है (देखें KJV)। [7]बाइबल की घटनाएं हमेशा कालक्रम के अनुसार नहीं बनाई गई हैं, परन्तु अब्राहम के लिए उम्र घटनाओं की इस शृंखला के सम्बन्ध में दी गई है (देखें उत्पत्ति 12:4; 16:3, 16; 17:1)। रब्बियों को कालक्रम के अनुसार उत्पत्ति 15:6 और अध्याय 17 की घटनाओं के बीच में इससे भी अधिक अर्थात उन्नतीस वर्ष का समय था। [8]LXX में ''चिह्न'' के लिए यहां इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द रोमियों 4:11 वाला शब्द ही है। [9]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, द *मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ार द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 129. [10]डग्लस मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 154.

[11]रिचर्ड ए. बैटे *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि लिविंग कमैंट्री (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969), 60 से लिया गया। [12]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 108. [13]''वंशजों'' का अनुवाद ''बीज'' के लिए शब्द *sperma* से किया गया है (देखें KJV)। ''वंशजों'' के सम्बन्ध में 4:16 पर नोट्स देखें। [14]देश (सम्पत्ति) देने की अब्राहम से की गई एकमात्र प्रतिज्ञा यह थी कि वह और उसकी संतान कनान देश के वारिस होंगे। यह प्रतिज्ञा आज पूरी होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह पुराने नियम के समय में पूरी हो गई थी। कई बार इस्राएल का राज्य भूमध्य सागर से फरात नदी तक फैल जाता था। (देखें उत्पत्ति 15:18; 2 शमुएल 8:3; KJV; 1 राजा 8:65.) [15]यहूदी शिक्षक यह ज़ोर देते थे कि अब्राहम के पास मूसा पर प्रकट किए जाने से सदियों पहले व्यवस्था थी, परन्तु पौलुस ने इसका इनकार किया। [16]*दि एनलेटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, 1971), 228. [17]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोस्ज़िट्री डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 3. [18]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1965), 34. [19]NASB में गलातियों 3:19; 1 तीमुथियुस 2:14; और इब्रानियों 2:2; 9:15 में इस शब्द का अनुवाद ''transgression[s]'' किया गया है। [20]*ट्रुथ इन लव* टैलीविज़न कार्यक्रम फोर्थ वर्थ, टैक्सस, 23 जनवरी 2002 में दिया गया डेव मिलर का संदेश।

[21]इस आयत में ''व्यवस्था'' से पहले एक निश्चित उप-पद है सो पौलुस यहां यहूदियों की ही बात कर रहा था। कइयों ने आयत 16 का यह अर्थ निकालने की कोशिश की है कि उद्धार के *दो* ढंग हैं। जिसमें एक यहूदियों के लिए है और दूसरा अन्यजातियों के लिए। पूरे अध्याय को पढ़ने के बाद कोई इस निष्कर्ष पर कैसे पहुंच सकता है, पता नहीं। पौलुस के दिमाग में वे यहूदी थे जिन्होंने यीशु में भरोसा किया था। [22]विलियम बाउर एण्ड रोलैंड के. हैरिसन, ''इश्माएल,'' *दि इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., सम्पा. ज्योफ्री ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 2:905. [23]मेकोर्ड। [24]लेखक अज्ञात (http://www.kididdles.com/mouseum/f033.html; इंटरनेट; 11 नवंबर, 2004 को देखा गया)।